एम.ए. हिन्दी

भाषा विज्ञान

प्रथम सेमेस्टर (चतुर्थ प्रश्न-पत्र)

एवं

हिन्दी भाषा

द्वितीय सेमेस्टर (चतुर्थ प्रश्न-पत्र)

संपादक - डॉ. रमेश टण्डन

एम.ए. हिन्दी
भाषा विज्ञान एवं हिन्दी भाषा
प्रथम सेमेस्टर (चतुर्थ प्रश्न-पत्र) द्वितीय सेमेस्टर (चतुर्थ प्रश्न-पत्र)
संपादक
डॉ. रमेश टण्डन

भाषा विज्ञान एवं हिन्दी भाषा

ISBN- 978-93-89989-46-5

●

प्रकाशक

वैभव प्रकाशन

अमीनपारा चौक, पुरानी बस्ती रायपुर (छत्तीसगढ़)

दूरभाष : 0771-4038958, मो. 94253-58748

e-mail : sahityavaibhav@gmail.com

www.vaibhavprakashan.com

आवरण सज्जा : कन्हैया साहू

प्रथम संस्करण : May 2020

मूल्य : 500.00 रुपये

कॉपी राइट : लेखकाधीन

●

BHASHA VIGYAN EVAM HINDI BHASHA

BY : DR. RAMESH TANDAN

Published by

Vaibhav Prakashan

Amin Para, Purani basti

Raipur, Chhattisgarh (India)

First Edition : May 2020

Price : Rs. 500.00

(प्रस्तुत पुस्तक के विभिन्न अध्यायों में लिखित पाठ्य सामग्री उसके लेखक/संकलनकर्ता के द्वारा एम ए हिन्दी में अध्ययनरत छात्रों के हित के लिए विभिन्न किताबों अथवा नेट से संकलित की गई है। अपने पाठ की पूर्णता के लिए इस पुस्तक के अध्याय लेखकों ने मूल किताबों अथवा परवर्ती संदर्भ/ शोध ग्रंथों अथवा नेट से उद्धरण अथवा उदाहरण लिए हैं, अतः उन मूल किताबों अथवा परवर्ती संदर्भ/शोध ग्रंथों अथवा नेट के क्रमशः लेखकों अथवा संपादकों/शोध छात्रों अथवा अपलोडर्स का सर्वश्रेष्ठ आभार जिनकी पाठ्य सामग्री को यहाँ उद्धृत किया जा सका है। मौलिक तथ्यों /परिभाषा आदि में फेरबदल के लिए इस पुस्तक के संपादक अथवा प्रकाशक जिम्मेदार नहीं होंगे अपितु अध्याय लेखक स्वयं जिम्मेदार होंगे तथा किसी विवाद की स्थिति में न्याय क्षेत्र खरसिया (छ.ग.) होगा।)

एम. ए. हिन्दी –

भाषा विज्ञान

(प्रथम सेमेस्टर – चतुर्थ प्रश्न–पत्र)

एवं

हिन्दी भाषा

द्वितीय सेमेस्टर (चतुर्थ प्रश्न–पत्र)

(छत्तीसगढ़ स्थित अटल बिहारी वाजपेयी विश्वविद्यालय बिलासपुर के अन्तर्गत विभिन्न महाविद्यालयों में संचालित एम ए हिन्दी प्रथम सेमेस्टर चतुर्थ प्रश्न–पत्र (भाषा विज्ञान) एवं एम ए हिन्दी द्वितीय सेमेस्टर चतुर्थ प्रश्न–पत्र (हिन्दी भाषा) के नवीनतम सम्पूर्ण पाठ्यक्रम पर आधारित एवं अन्य विश्वविद्यालयों के लिए भी एम. ए. हिन्दी की पाठ्य–पुस्तक)

संपादक

डॉ0 रमेश टण्डन

विभागाध्यक्ष (सहायक प्राध्यापक– हिन्दी)

महात्मा गांधी शासकीय कला एवं विज्ञान स्नातकोत्तर महाविद्यालय

खरसिया, जिला– रायगढ़ (छ.ग.)

वैभव प्रकाशन

रायपुर (छ.ग.)

अनुक्रम

क्र.	अध्याय	लेखक	पृष्ठ क्र.
1	भाषा की परिभाषा और अभिलक्षण	प्रो. चरणदास बर्मन	13
2	भाषा व्यवस्था और भाषा व्यवहार	डॉ. श्रीमती नीलम तिवारी	21
3	भाषा संरचना और भाषिक प्रकार्य	डॉ. जयती बिश्वास	25
4	भाषा विज्ञान स्वरूप एवं व्याप्ति	डॉ. बी नन्दा जागृत	43
5	अध्ययन की दिशाएँ– वर्णनात्मक, ऐतिहासिक, तुलनात्मक	डॉ. रमेश कुमार टण्डन	59
6	स्वन विज्ञान का स्वरूप और शाखाएँ	प्रो. एस कुमार गौर	65
7	वागवयव और उनके कार्य	डॉ. श्रीमती नीलम तिवारी	72
8	स्वन की अवधारणा और स्वनों का वर्गीकरण	प्रो. राजकुमार लहरे	80
9	स्वनगुण, स्वनिक परिवर्तन	डॉ. दिनेश श्रीवास	90
10	स्वनिम विज्ञान का स्वरूप, स्वनिम की अवधारणा	श्री आशीष राठौर	96
11	स्वनिम के भेद, स्वनिमिक विश्लेषण	डॉ. दिनेश श्रीवास	101
12	रूप प्रक्रिया का स्वरूप और शाखाएँ	श्रीमती आशा भारद्वाज	109
13	रूपिम की अवधारणा और भेद– मुक्त, आबध्य, अर्थदर्शी, संबंधदर्शी; रूपिम के प्रकार्य	प्रो. राजकुमार लहरे	120
14	वाक्य की अवधारणा, वाक्य के भेद	डॉ. धनेश्वरी दुबे	135
15	वाक्य विश्लेषण, निकटस्थ अवयव विश्लेषण; गहन संरचना, बाह्य संरचना	डॉ. दिनेश श्रीवास	145
16	अर्थ की अवधारणा, शब्द और अर्थ में सम्बन्ध	प्रो. करुणा गायकवाड	152
17	पर्यायता, अनेकार्थता, विलोमता	प्रो. अमीला कोर्राम	158
18	अर्थ परिवर्तन	डॉ. डेजी कुजूर	168

5.

भाषा विज्ञान के अध्ययन की दिशाएँ : वर्णनात्मक, ऐतिहासिक व तुलनात्मक

डॉ0 रमेशकुमार टण्डन*

सेमेस्टर – I प्रश्नपत्र– IV (भाषा विज्ञान),
इकाई – 01 (भाषा और भाषा विज्ञान)
भाषा की परिभाषा और अभिलक्षण, भाषा व्यवस्था और भाषा व्यवहार, भाषा संरचना और भाषिक–प्रकार्य। भाषा विज्ञान स्वरूप और व्याप्ति, अध्ययन की दिशाएँ– वर्णनात्मक, ऐतिहासिक और तुलनात्मक।

वर्णनात्मक पद्धति

यह पद्धति किसी विशिष्ट काल की किसी विशिष्ट भाषा का अनुशीलन करने में प्रवृत्त होती है। भाषा के संज्ञा, सर्वनाम, क्रिया, विशेषण, प्रत्यय विभक्ति आदि रूपों का वर्णनात्मक सम्यक् अनुशीलन इस पद्धति की विशेषता है। भाषा विज्ञान की ध्वनि, वाक्य, अर्थ तथा रूप को इस प्रवृत्ति

---

*जन्म : 03 जनवरी 1975, ग्राम– फूलबंधिया (रायगढ़), माता : श्रीमती फूलकुँवर टण्डन, पिता : श्री कौशलप्रसाद टण्डन, पत्नी : श्रीमती पूर्णिमा टण्डन, योग्यता : एम. ए. (हिन्दी, अंग्रेजी), सेट, पी–एच. डी., प्रकाशन : 1. काव्य संग्रह 'पीड़ा' 2014 में जयपुर से प्रकाशित, 2. पुस्तक 'आधुनिक कालीन हिन्दी साहित्य में नारी–अस्मिता का धरातलीय सच' का फरवरी 2020 में संपादन, अन्य : अन्तर्राष्ट्रीय शोध–पत्रिकाओं में 25 शोध–पत्र एवं राष्ट्रीय शोध–पत्रिकाओं में 04 शोध–पत्र प्रकाशित, 29 राष्ट्रीय शोध–संगोष्ठियों / कार्यशाला में सहभागिता, 03 अन्तर्राष्ट्रीय शोध–संगोष्ठियों / कार्यशाला में सहभागिता, 04 किताबों में चैप्टर लेखक, 'सृजन' पत्रिका का संपादन, 'सतनाम संदेश' पत्रिका का कुछ वर्षों तक संपादन, पत्र–पत्रिकाओं में कविता / लेख एवं अन्य उल्लेखनीय कार्यों के लिए लगातार छपना। सम्प्रति : विभागाध्यक्ष (सहायक प्राध्यापक) – हिन्दी, महात्मा गांधी शासकीय कला एवं विज्ञान स्नातकोत्तर महाविद्यालय खरसिया, मो0 नं0 : 9685671975, ई मेल : rameshktandan@gmail.com

के द्वारा रूपायित करने में सुबोधता प्राप्त होती है। भारतीय भाषा शास्त्र में पाणिनी और महर्षि पतंजलि का इस प्रवृत्ति के प्रति विशेष रूझान रहा है।

जब किसी भाषा के विशिष्ट काल का संगठनात्मक अध्ययन किया जाता है, तो उसे वर्णनात्मक अध्ययन कहते हैं। प्रसिद्ध विद्वान पाणिनी ने अष्टाध्यायी में इसी प्रकार का भाषा अध्ययन प्रस्तुत किया गया है। इसमें भाषा के संज्ञा, सर्वनाम, क्रिया तथा विशेषण आदि की वर्णनात्मक समीक्षा करते हुए ध्वनि, शब्द, वाक्य आदि पर विचार किया जाता है। भाषा की सभी इकाइयों पर अध्ययन करते हुए उनसे संबंधित नियम निर्धारित किए जाते हैं। भाषा के सीमित काल का अध्ययन होने के बावजूद इसका प्राचीन काल से ही विशेष महत्त्व रहा है। इस प्रकार के अध्ययन में भाषा के साधु–असाधु रूपों पर चिंतन करते हुए उसकी ध्वनि, शब्द आदि इकाइयों रूपी शरीरांग के साथ उसकी अर्थ रूपी आत्मा पर भी विचार किया जाता है। वर्तमान समय में वर्णनात्मक पद्धति के भाषा अध्ययन की ओर विद्वानों का विशेष झुकाव दिखाई पड़ता है।

वर्णनात्मक भाषा विज्ञान के अन्तर्गत किसी विशिष्ट काल की किसी एक विशिष्ट भाषा का अध्ययन किया जाता है। भाषा विज्ञान की इस पद्धति में, भाषा सामान्य का ही नहीं, वरन् किसी विशेष भाषा का वर्णन किया जाता है। भाषा की वर्णनात्मक समीक्षा करते हुए भाषा की ध्वनि, संरचना तथा शुद्ध – अशुद्ध रूपों को उल्लेख किया जाता है। ध्वनि, शब्द, रूप, वाक्य आदि का अध्ययन कर ऐसे नियम भी निर्धारित किए जाते हैं जिनसे भाषा का स्वरूप प्रकट किया जा सके। वर्णनात्मक भाषा विज्ञान, भाषा के स्वरूप को केवल वर्णित करता है। वह, यह नहीं दिखाता कि भाषा का वह रूप शुद्ध है या अशुद्ध। इसमें अर्थ तत्वों का अध्ययन नहीं किया जाता, जो कि भाषा का प्राण तत्व है। इसी कारण इसमें अपूर्णता प्रतीत होती है। 'पाणिनी' की अष्टाध्यायी इस पद्धति का सर्वोत्तम उदाहरण है।

वर्णनात्मक भाषा विज्ञान, आधुनिक हिन्दी का वर्णन इस प्रकार करता है– 'दिल्ली' और आसपास रहने वाले लोगों पर 'हरियाणवी' भाषा का प्रभाव है। उदाहरण के लिए 'हरियाणवी' भाषा में 'मुझे', 'मुझको' जाना है, के स्थान पर 'मैंने' जाना है।

वर्णनात्मक भाषा विज्ञान शुद्ध या अशुद्ध नहीं देखता, इसके विपरीत व्याकरणात्मक भाषा विज्ञान इस प्रयोग को अनुचित या अशुद्ध मानेगा।

वर्णनात्मक भाषा विज्ञान, भाषा के प्रयोग में जो कुछ भी है, इसका तटस्थ भाषा से वर्णन मात्र कर देता है, वह चाहे शुद्ध हो या अशुद्ध। परन्तु व्याकरणात्मक भाषा विज्ञान, व्याकरण के नियमों के अनुसार शुद्ध या अशुद्ध निश्चित करता है। 'प्रोफेसर सस्यूर' से पहले भाषा विज्ञान में अध्ययन की पद्धति ऐतिहासिक थी। 'सस्यूर' ही पहले व्यक्ति थे, जिन्होंने घोषणा की थी कि भाषा का वैज्ञानिक अध्ययन केवल ऐतिहासिक पद्धति पर नहीं बल्कि, वर्णनात्मक दृष्टिकोण से भी हो सकता है। सस्यूर ने सर्वप्रथम भाषा विज्ञान को दो वर्गों में विभाजित किया। 'एककालिक' भाषा विज्ञान, दूसरा 'बहुकालिक' भाषा विज्ञान। जिसे सस्यूर ने एककालिक भाषा विज्ञान कहा था, उसी को अमेरिकी वैज्ञानिक ने वर्णनात्मक भाषा विज्ञान की संज्ञा दी।

ऐतिहासिक पद्धति

ऐतिहासिक पद्धति में भाषा विशेष का काल सापेक्ष क्रमागत परम्परा में इतिवृत्तात्मक अनुशीलन होता है। भाषा का आदि क्रमिक परिवर्तन और क्रमिक विकास इसके अध्ययन के विषय हैं। उदाहरण के लिए– वैदिक संस्कृत से लेकर पालि, प्राकृत, अपभ्रंश आदि के रूप में परिवर्तित होते हुए वर्तमान हिन्दी आदि भाषाओं का विकास हुआ है। यह क्रमिक विकास इस ऐतिहासिक भाषा विज्ञान के अध्ययन का विषय है। किसी विशिष्ट भाषा की ध्वनि, वाक्य, रूप तथा अर्थ में जो परिवर्तन हुए हैं, उनका ऐतिहासिक विश्लेषण करना भी इस प्रवृत्ति का लक्ष्य है। प्राचीनकाल से लेकर आज तक भाषाओं का काल क्रमानुगत अध्ययन इस प्रवृत्ति की महती विशेषता है।

इस पद्धति में भाषा विशेष के काल क्रमिक विकास का अध्ययन किया जाता है। यदि किसी विशेष भाषा के कालों के विवरणात्मक अध्ययन को कालक्रम से व्यवस्थित कर दिया जाए, तो उसे ऐतिहासिक अध्ययन कहा जाता है। भाषा विकास या परिवर्तन की विभिन्न धाराओं का अध्ययन इसी पद्धति में होता है। भारतीय आर्य भाषाओं के विकास क्रम में हिन्दी का अध्ययन करना चाहें तो, इसी पद्धति से वैदिक संस्कृत, लौकिक संस्कृत, प्राकृत, अपभ्रंश भाषाओं पर विचार करते हुए हिन्दी भाषा का अध्ययन किया जाना अपेक्षित होता है। यदि हिन्दी शब्दों का उद्भव और विकास जानना चाहेंगे तो संस्कृत, पाली, प्राकृत और अपभ्रंश के साथ हिन्दी का कालक्रमिक अध्ययन करने के लिए इसी पद्धति का प्रयोग किया जाना उचित होता है। यथा– कर्म (संस्कृत) ⟶ कम्म (प्राकृत) ⟶ काम (हिन्दी)।

भाषा चिर परिवर्तनशील है। समय तथा स्थान परिवर्तन के साथ भाषा में परिवर्तन होना स्वाभाविक ही है। समय–समय पर भाषा की ध्वनियों, शब्दों तथा वाक्यों में ही नहीं अर्थ में भी परिवर्तन होता रहता है। यह परिवर्तन हमें ऐतिहासिक पद्धति के अध्ययन से ही ज्ञात होता है।

आधुनिक भाषा विज्ञान के जनक 'द सस्यूर' ने भाषा विज्ञान की इस पद्धति शाखा को गत्यात्मक या विकासात्मक पद्धति कहा है। वर्णनात्मक भाषा विज्ञान में किसी कार्य विशेष का अध्ययन किया जाता है, इसलिए वह स्थितिआत्मक पद्धति है। जबकि ऐतिहासिक भाषा विज्ञान में किसी भाषा के मूल से चलकर उसके वर्तमान रूप तक का क्रमिक अध्ययन किया जाता है। जब किसी भाषा के ध्वनि, रूप, वाक्य और अर्थ के परिवर्तन का कालक्रमानुसार अध्ययन कर तत्संबंधी नियमों का प्रतिपादन किया जाता है, तो उसे ऐतिहासिक भाषा विज्ञान कहा जाता है। वैदिक युग से प्रारम्भ कर, संस्कृत प्राकृत अपभ्रंश की परम्परा दिखाते हुए हिन्दी भाषा के क्रमिक विकास पर प्रकाश डालना ऐतिहासिक पद्धति कहलाती है। वैदिक भाषा ही परिवर्तित होते–होते हिन्दी के रूप में कैसे उपस्थित हो गई, कालक्रम से वैदिक भाषा में जो परिवर्तन हुए, उनके क्या कारण थे ? इन प्रश्नों पर भी ऐतिहासिक भाषा विज्ञान विचार करता है। उदाहरण के लिए–

संस्कृत का 'हस्त' और प्राकृत का 'हक', हिन्दी में 'हाथ' कैसे बन गया, इसका परिचय हमें भाषा विज्ञान की इस पद्धति के अन्तर्गत मिल जाता है।

तुलनात्मक पद्धति

इस पद्धति के अन्तर्गत दो या दो से अधिक भाषाओं का काल सापेक्ष अध्ययन तुलनात्मक ढंग से किया जाता है। पूरे विश्व में तीन हजार भाषाएँ हैं। इस पद्धति से किसी भी भाषा विशेष के व्याकरणिक रूप का तथा उसके इतिहासपरक विकास एवं ह्रास का अनुशीलन किया जाता है। हिन्दी की विभिन्न बोलियों का तुलनात्मक अध्ययन इसी पद्धति से सम्भव है। ब्रज और अवधी की ध्वनि – प्रक्रिया, रूप – प्रक्रिया, वाक्य – प्रक्रिया एवं अर्थ – प्रक्रिया किस प्रकार एक दूसरे से समान अथवा विषम हैं, इन सभी का अध्ययन तुलनात्मक पद्धति से ही हो सकता है।

तुलनात्मक पद्धति भाषा विज्ञान की एक अभिनव प्रक्रिया है। संस्कृत, ग्रीक, लैटिन आदि पुरानी भाषाओं की तुलना का श्रेय इसी पद्धति

को है। भाषा के सनातन और बदलते हुए कीर्तिमान, तुलनात्मक दृष्टि से ही समाकलित किए जा सकते हैं। वस्तुतः, तुलनात्मक भाषा विज्ञान की पद्धति में, वर्णनात्मक सूक्ष्मता और ऐतिहासिकता क्रम दोनों विद्यमान हैं।

भाषा अध्ययन की जिस पद्धति में दो या दो से अधिक भाषाओं की ध्वनियों, वर्णों, शब्दों, पदों, वाक्यों और अर्थों आदि की तुलना की जाती है, उसे भाषा अध्ययन की तुलनात्मक पद्धति कहते हैं। इस अध्ययन के अन्तर्गत एक भाषा के विभिन्न कालों के रूपों का तुलनात्मक अध्ययन कर उसकी विकासात्मक स्थिति का स्पष्ट ज्ञान प्राप्त करते हैं। एक भाषा के विभिन्न बोलियों की समता– विषमता जानने के लिए भी भाषा अध्ययन की इस पद्धति का ही सहारा लिया जाता है। इसका प्रबल प्रमाण है कि प्रारम्भ में इसके लिए तुलनात्मक भाषा विज्ञान नाम दिया गया था। यह भी सत्य है कि बिना तुलनात्मक अध्ययन–दृष्टिकोण अपनाएं किसी नियम का निर्धारण करना अत्यन्त कठिन होता है। भाषा परिवार के निर्धारण में भी तुलनात्मक अध्ययन आवश्यक होता है। भाषा की सरसता, सरलता या विशेषताओं को स्पष्ट रूप से रेखांकित करने के लिए तुलनात्मक अध्ययन सर्वाधिक उपयोगी होता है।

तुलना के लिए किन्हीं दो चीजों का होना अनिवार्य होता है। अतः तुलनात्मक अध्ययन में दो या दो से अधिक भाषाओं को लिया जाता है। इसमें दो या दो से अधिक ध्वनियों, पदों, शब्दों, वाक्यों तथा अर्थों आदि का तुलनात्मक अध्ययन प्रस्तुत किया जाता है। भाषा विज्ञान की ऐतिहासिक पद्धति में भी तुलना का समावेश रहता है किन्तु वह तुलना एक ही भाषा के विभिन्न कालों में प्रचलित भाषा रूपों से की जाती है। जबकि तुलनात्मक भाषा विज्ञान दो या दो से अधिक भाषा की तुलना करके निहित 'साम्य' एवं 'वैसाम्य' परक नियमों का निर्धारण करता है। जिन भाषाओं का तुलनात्मक अध्ययन किया जाता है, उनमें ध्वनि, रूप, वाक्य, अर्थ की समानताएँ मिलती हैं, तो उन्हें एक परिवारों का मान लिया जाता है। अर्थात् उनके सम्बन्ध में यह निष्कर्ष निकाला जाता है कि 'भले ही उनमें हजारों मिलों की दूरी एवं उच्चारण संबंधी थोड़ी सी भी और समानता क्यों न हो फिर भी उनकी उत्पत्ति एक ही मूल भाषा की मानी जाती है'। सन् 1786 में सर विलियम जोन्स को संस्कृत, ग्रीक, लैटिन, जर्मन, अंग्रेजी और फारसी भाषाओं का तुलनात्मक अध्ययन करने पर निम्नलिखित समानताएँ मिली–

संस्कृत	–	नव	नीड
ग्रीक	–	NIOS	NEOS
लैटिन	–	PATER	NIDS
जर्मन	–	VATER	NEST
अंग्रजी	–	FATHER	NEST
फारसी	–	पिदर	नौ

विलियम जोन्स ने अनुभव किया कि यह साम्य निराधार नहीं हो सकता। उन्होंने कहा कि उपर्युक्त भाषा की एक ही जननी है, जिसका अस्तित्व अब नहीं रहा। तुलनात्मक अध्ययन के आधार पर यह परिकल्पना की गई कि भारोपीय भाषा का स्वरूप कैसा रहा होगा। लिखित प्रमाण के अभाव में किसी भाषा के मूल रूप की परिकल्पना अब महत्त्वपूर्ण नहीं समझी जाती। एककालिक दृष्टि से दो भाषाओं के विभिन्न स्तरों की तुलना की जा सकती है।

संदर्भः–

पाण्डेय, अपर्णा; भाषा विज्ञान, पायनियर पब्लिशर, 2020

www.hindivibhag.com

www.scotbuzz.org

♦●♦

"मुझे पैतृक–भाषा बोलने में कभी–भी संकोच नहीं होगा, मैं विदेश में भी अपने लोगों के बीच इस भाषा का प्रयोग करके गर्व महसूस करूँगा।"

(छत्तीसगढ़ी भाषा के संदर्भ में)

–डॉ. रमेश टण्डन फूलबंधिया